B.A.-1, FIRST SEMESTER

प्रारम्भिक बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास

Emotional development in Early Childhood

(2 से 6 वर्ष की अवस्था)

❖ **अर्थ:**

- संवेग अंग्रेजी शब्द **Emotion** का पर्यायवाची है।
- यह लैटिन भाषा के **Emotion** शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ **Out ;k To move** अर्थात् हिला देना या उत्तेजित होना है।
- भाव प्रत्येक व्यक्ति में होते हैं, जब उनकी मात्रा बढ़ जाती है तो व्यक्ति उत्तेजित होता है और इसी उत्तेजित अवस्था को संवेग कहते हैं।

❖ **परिभाषा-**

- जेम्स ड्रेवर के शब्दों में संवेग शरीर की जटिल अवस्था है जिसमें सांस लेने, नाड़ी, ग्रन्थियाँ, मानसिक दशा, उत्तेजना, अवरोध आदि का अनुभूतिपर प्रभाव पड़ता है और मांसपेशियाँ निर्धारित व्यवहार करने लगती हैं।
- पी0टी0 यंता के अनुसार, ''संवेग सम्पूर्ण प्राणी का तीव्र मनोवैज्ञानिक उपद्रव है। इसकी उत्पत्ति मनोवैज्ञानिक कारणों से होती है, जिसमें चेतन, अनुभूति, व्यवहार तथा आंतरिक अवयवों की क्रियायें सम्मिलित रहती हैं। ' '

❖ **संवेगों की विशेषताएँ-**

1. संवेग व्यापक होते हैं और प्रत्येक प्राणी मंे पाये जाते हैं।
2. संवेग पूर्णतः व्यक्तिगत होते हैं, एक का संवेग दूसरेके संवेग से भिन्न होता है।
3. संवेगों की प्रकृति स्थायी और अस्थायी दोनों प्रकार से होती है।
4. संवेग में विचार प्रक्रिया का लोप हो जाता है।
5. संवेगों की उपस्थिति से शारीरिक परिवर्तन होते हैं।

❖ **प्रारम्भिक बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास-**

- इस अवस्था में शैशवावस्था के संवेगों का ही विकसित रूप दिखायी देता है।
- शैशवास्था की तुलना में संवेगों की तीव्रता में कुछ कमी आ जाती है।
- पूर्व बाल्यावस्था में प्रत्येक बालक की संवेगात्मक अभिव्यक्ति का स्वरूप अलग-अलग होता है।
- बालक सामाजिक निन्दा के कारण संवेगों पर नियंत्रण करना सीख जाता है।
- इस अवस्था में प्रौढ़ों के समान संवेंगों में स्थायित्व नहीं होता है।

❖ **प्रारम्भिक बाल्यावस्था के प्रमुख संवेग-**

1. भय-

- भय की दशा में बालक रोते, चीखते और काँपते हैं।
- इस अवस्था में अधिकांश बालक जानवरों, अंधेरे स्थान, ऊँचे स्थान, अकेलेपन, तीव्र ध्वनि, अनजान व्यक्तियों और वस्तुओं से डरते हैं।
- कारमाइकेल (1944) का विचार है कि दो वर्ष की अवस्था से 6 वर्ष की अवस्था तक भय संवेगों का विकास सामान्यतः चरम सीमा तक पहुंचजाता है।
- 3 वर्ष के बालक भय की परिस्थिति में वे अपने को असहाय समझते हैं और सहायता मांगते हैं।
- बालकों को जेसे-जैसे सामाजिक संबंध बढ़ते हैं उनका भय कम होता जाता है।

2. शर्मीलापन-

- बच्चे अपने आने वाले मेहमानों या किसी समूह या किसी के सामने बोलने, बातचीत करने और गाना आदि सुनाने में शर्माते हैं।
- बालकों में शर्म की अभिव्यक्ति वैसे-वैसे कम होती जाती है जैसे-जैसे वे अधिक और अधिक व्यक्तियों के सम्पर्क में आते जाते हैं।

3. चिन्ता-

- चिन्ता का विकास भय संवेग के विकास के बाद प्रारम्भ होता है।

- यह बालक में उस समय उत्पन्न होती है जब उसमें कल्पना का विकास प्रारम्भ हो जाता है और वह स्कूल जाना प्रारम्भ करता है।
- आयु वृ द्धि के साथ साथ इस संवेग में वृ द्धि होती जाती है।
- जो बच्चे काल्पनिक जगत में रहते हैं दिवास्वप्न देखते हैं उनमें यह संवेग अधिक पाया जाता है।
- चिन्ता का कारण लड़कियाँ दिवास्वप्न अधिक देखने लगती है जबकि लड़के चिन्ता छिपाने के कारण विद्रोही बन जाते हैं।

4. क्रोध-

- अध्ययनों में देखा गया है कि लगभग तीन वर्ष की अवस्था में बालक-बालिकाओं में क्रोध सर्वाधिक मात्रा में होता है। उम्र बढ़ने के साथ इसमें कमी आती है।
- क्रोध में बालक आक्रामक हो जाता है। वह मारना, पीटना, काटना, झटका देना, थूकना व्यवहार अपनाता है।

5. **ईर्ष्या-** ईर्ष्या की उत्पत्ति क्रोध से होती है। बालकों में ईर्ष्या की उत्पत्ति विशेषकर 1) से 2 वर्ष की अवस्था में होती है। आयु वृद्धि के साथ बच्चों की ईर्ष्या के स्वरूप में परिवर्तन आता जाता है। इसकी तीव्रता 3-4 वर्ष की उम्र मंे देखी जा सकती है। धीरे-धीरे जब बालक का बौद्धिक विकास हो जाता है तो ा बालकों में ईर्ष्या की भावना कम हो जाती है।
6. **जिज्ञासा-** बालकों में जिज्ञासा प्रवृत्ति का विकास 2 से 3 वर्ष की आयु में होता है। छः वर्ष की आयु में यह अपनी चरम सीमा पर पहुंचजाता है। वैज्ञानिकों के मत के अनुसार तीव्र बुद्धि बालक सामान्य बुद्धि बालकों की तुलना में अधिक जिज्ञासु होते हैं।
7. **स्नेह-** बच्चों में सबसे पहले माँ के प्रति स्नेह विकसित होता है अथवा जो उसका शैशवावस्था में पालन-पोषण करता है। डेढ़ से दो वर्ष की आयु में जब बच्चा दूसरेके े साथ खेलना शुरू करता है तो अपने स्नेह का प्रदर्शन दूसरेबच्चों के साथ करता है। 4 से 5 वर्ष के बालक अपने खिलौने तथा पालतू जानवरों से भी प्रेम करते हैं।
8. **आनन्द-** एक वर्ष के बालक में आनन्द का संवेग आसानी से देखा जा सकता है। 3 से 4 वर्ष की आयु में यह संवेग और अधिक स्पष्ट हो जाता है। आनन्द संवेग व्यक्ति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले तत्व-

• शारीरिक स्वास्थ्य	• बुद्धि
• थकान और भूख	• बालक अभिभावक संबंध
• बालक का सामाजिक वातावरण	• परिवार की आर्थिक स्थिति
• बच्चों की जन्मक्रम	• लिंग
• बालकों का व्यक्तित्व	• बालक का पारिवारिक वातावरण
• परिवार का आकार	•

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. किस मनोवैज्ञानिक ने संवेग को शरीर की जटिल अवस्था बतायी है-
   (a) पी0टी0 यंग (b) जेम्स ड्रेवर
   (c) हरलॉक (d) पेटरसन
2. संवेगों की प्रकृति होती है-
   (a) स्थायी (b) अस्थायी
   (c) स्थायी एवं अस्थायी (d) इनमें से कोई भी नहीं
3. कारमाइकेल के अनुसार किस अवस्था में संवेग चरम सीमा तक पहुंचजाती है?
   (a) 2 से 6 वर्ष (b) 3 से 5 वर्ष
   (c) 1 से 2 वर्ष (d) 6 से 10 वर्ष
4. क्रोध एवं ईर्ष्या एक प्रकार का है-
   (a) संवेग (b) व्यवहार
   (ब) आदत (d) उपरोक्त सभी
5. संवेग को प्रभावित करने वाले कारक हैं-
   (a) बुद्धि एवं पारिवारिक वातावरण (b) विद्यालय
   (c) बाजार (d) शिक्षक का व्यवहार

उत्तर- 1-d, 2-c, 3-a, 4-a, 5-a